जब शेर जी उठा/मूर्ख वैज्ञानिक

एक नगर मे चार मित्र रहते थे। उनमे से तीन बडे वैज्ञानिक थे, किन्तु बुद्धिरहित थे, चौथा वैज्ञानिक नहीं था, किन्तु बुद्धिमान् था। चारो ने सोचा कि विद्या का लाभ तभी हो सकता है, यदि वे विदेशो मे जाकर धन संग्रह करे। इसी विचार से वे विदेशयात्रा को चल पडे।

कुछ दूर जाकर उनमें से सब से बडे ने कहा- "हम चारो विद्वानो मे एक विद्या-शून्य है, वह केवल बुद्धिमान् है। धनोपार्जन के लिये और धनिको की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये विद्या आवश्यक है। विद्या के चमत्कार से ही हम उन्हे प्रभावित कर सकते है। अतः हम अपने धन का कोई भी भाग इस विद्याहीन को नही देगे। वह चाहे तो घर वापिस चला जाये।"

दूसरे ने इस बात का समर्थन किया। किन्तु, तीसरे ने कहा- "यह बात उचित नही है। बचपन से ही हम एक दूसरे के सुख-दुःख के सहभागी रहे है। हम जो भी धन कमायेगे, उसमे इसका हिस्सा रहेगा। अपने-पराये की गणना छोटे दिल वालो का काम है। उदार-चरित व्यक्तियो के लिये सारा संसार ही अपना कुटुम्ब होता है। हमे उदारता दिखलानी चाहिये।"

उसकी बात मानकर चारो आगे चल पडे। थोडी दूर जाकर उन्हे जंगल में एक शेर का मृत-शरीर मिला। उसके अंग-प्रत्यंग बिखरे हुए थे। तीनो विद्याभिमानी युवको ने कहा, "आओ, हम अपनी विज्ञान की शिक्षा की परीक्षा करे। विज्ञान के प्रभाव से हम इस मृत-शरीर मे नया जीवन डाल सकते है।" यह कह कर तीनो उसकी हड्डियां बटोरने और बिखरे हुए अंगो को मिलाने मे लग गये। एक ने अस्थिसंचय किया, दूसरे ने चर्म, मांस, रुधिर संयुक्त किया, तीसरे ने प्राणो के संचार की प्रक्रिया शुरु की। इतने मे विज्ञान-शिक्षा से रहित, किन्तु बुद्धिमान् मित्र ने उन्हे सावधान करते हुए कहा- "जरा ठहरो। तुम लोग अपनी विद्या के प्रभाव से शेर को जीवित कर रहे हो। वह जीवित होते ही तुम्हे मारकर खाजायेगा।"

वैज्ञानिक मित्रो ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। तब वह बुद्धिमान् बोला- "यदि तुम्हे अपनी विद्या का चमत्कार दिखलाना ही है तो दिखलाओ। लेकिन एक क्षण ठहर जाओ, मैं वृक्ष पर चढ जाऊँ।" यह कहकर वह वृक्ष पर चढ गया।

इतने मे तीनो वैज्ञानिको ने शेर को जीवित कर दिया। जीवित होते ही शेर ने तीनो पर हमला कर दिया। तीनों मारे गये।

अतः शास्त्रो मे कुशल होना ही पर्याप्त नही है। लोक-व्यवहार को समझने और लोकाचार के अनुकूल काम करने की बुद्धि भी होनी चाहिये। अन्यथा लोकाचार-हीन विद्वान् भी मूर्ख-पंडितो की तरह उपहास के पात्र बनते है।

ल्ग मरे ल्गी उ०/भूर्ख वैज्ञानिक

ाएक नगर म ारहाा मित्र रहत था ाउनम स तीन ग्र वैज्ञानिक थ, किन्तु बुध्दिमा ाँ ाइत थ, ाँथा वैज्ञानिक नहीं था, किन्तु बुध्दिमान था। ाारो न साँचा कि विद्या का लाभ तभी ह ासकता ह, यदि व विदमें म एकर धन सांग्रह कर। सभी विचार म व विदम थााड़ क ााल पड़।

रा्ता मत्र एकर उनम स मेर मनर नि कहा- "हम ाार विद्वान मा एक विद्या-शून्य ह, वह कवल बुध्दिमान ह ाधन पाता ह न क लिय ाउर धनिक की प्रसन्नता प्राप्त करन क लिय विद्या आवश्यक ह। विद्या क ाभाव म ह ी हम उसक्षा ह ा विद्या कर सकत हाँ। अतः हम ाापन धन का कर्ई भी भाग उस विद्याहीन क नहीं द ग।। वह ाार भ घर वापिस ााला ाएा।"

दूसर न इस बात का समर्थन किया। किन्तु तीसर न कहा- "यह बात उचित नहीं ह। ाँ गबपन स ही हम एक दूसर क सुख-दुःख क साझ भागी रह ह ाँ हम ाँ ज ा भी धन कमाएँग, उसम उसका हिस्सा रहगा। अपन-पराय की गणना छोट दिल वाल करत ह । हम उदार-चरित व्यक्तियों क लिय सारा संसार ही अपना कुटुम्ब ह ा हम उदारता दिखलानी ाहिय।"

उसकी बात मानकर ाारो आग ाल पड़। थोड़ी दूर ाकर उन्ह जंगल म एक मर ाा का मृत-शरीर मिला। उसक अंग-प्रत्यंग बिखर हुए थ। तीन विद्याभिमानी युवक न कहा, "आओ, हम अपनी विज्ञान की शिक्षा की परीक्षा कर। विज्ञान क प्रभाव स हम इस मृत-शरीर म नया जीवन डाल सकत ह।" यह कह कर तीन उसकी हड्डियाँ बटोरन और बिखर हुए अंग क मिलान म लग गय। एक न अस्थि-सँचय किया, दूसर न ाम, मांस, रुधिर संयुक्त किया, तीसर न प्राण क संचार की प्रक्रिया शुरु की। इतन म विज्ञान-शिक्षा स रहित, किन्तु बुध्दिमान मित्र न उन्ह सावधान करत हुए कहा- "ज़रा ठहरो। तुम लोग अपनी विद्या क प्रभाव स मर को जीवित कर रह हो। वह जीवित होत ही तुम्ह मारकर खा जाएगा।"

वैज्ञानिक मित्रों न उसकी बात को अनसुना कर दिया। तब वह बुध्दिमान बोला- "यदि तुम्ह अपनी विद्या का ाभाव दिखलाना ही ह तो दिखलाओ। लकिन एक क्षण ठहर जाओ, म वृक्ष पर ाढ़ जाऊँ।" यह कहकर वह वृक्ष पर ाढ़ गया।

इतन म तीन वैज्ञानिक न मर को जीवित कर दिया। जीवित होत ही मर न तीन पर हमला कर दिया। तीन मार गय।

मउः साम्ःिभे किसुल फनें फी पटाप्पुनफी फालिकें-वब्रुफार क भिभाप्न जिर लकें ाार क
मनक्रुलु काम करन की गम्प्रिठी फनीं ाा जिया। मनम्रा लकें ाार-फीन विम्दना ठी भाप्र-
पंठित की उरफ उपफाम कपार्ु गनउ है।

मनब्राद - उगिप्ल्ल ापभें